MP Board Class 7th Hindi Bhasha Bharti Notes Chapter 23 कर्तव्य पालन

कर्तव्य पालन परीक्षोपयोगी गद्यांशों की व्याख्या

1. मैं हूँसूत्रधार। आज मैं धर्म-अधर्म, निश्चय-अनिश्चय,
सुख-दुख, कर्म-अकर्म आदि की ओर संकेत करने वाले
एक ऐसे प्रसंग से आपका साक्षात्कार कराने जा रहा हूँ
जिसने 'श्रीमद्भगवद्गीता' को जन्म दिया। कुरुक्षेत्र के मैदान
में कौरव और पाण्डव की सेनाएँ युद्ध के लिए आमने-
सामने खड़ी हैं। युद्धारम्भ के लिए शंखनाद हो चुका है।

सन्दर्भ-प्रस्तुत पंक्तियाँ 'कर्त्तव्यपालन' नामक पाठ से अवतरित हैं। इसकी रचयिता डॉ. छाया पाठक हैं।

प्रसंग-कुरुक्षेत्र के मैदान पर युद्ध के आरम्भ होने से पूर्व के दृश्य का वर्णन है।

व्याख्या-सूत्रधार के रूप में काल कुरुक्षेत्र के युद्धकाल का वर्णन करते हुए कहता है कि वह महाभारत युद्ध के एक ऐसे प्रसंग के बारे में बताना चाहता है जिसके कारण महान धर्म-ग्रन्थ 'गीता' की रचना हुई। महाभारतकाल का यह प्रसंग मानव के समक्ष अक्सर आने वाली विभिन्न विकट स्थितियों, जैसे-धर्म-अधर्म, निश्चय-अनिश्चय, सुख-दुख, कर्म-अकर्म आदि के समाधान हेतु एक मार्गदर्शक की-सी भूमिका निभाता है। कुरुक्षेत्र की रणभूमि में लड़ाई शुरू होने वाली है, बिगुल बज चुका है। एक ओर कौरवों की विशाल सेना खड़ी होती है तो दूसरी ओर पाण्डवों की सेना मोर्चा लिए हुए है।

2. हे कृष्ण! अपने इन प्रियजनों को देखकर तो मेरा मुख
सूखा जा रहा है। मेरे शरीर में कंप और रोमांच हो रहा है।
हाथ से गाण्डीव धनुष गिर रहा है। मेरा मन
भी भ्रमितसा हो रहा है। मुझमें यहाँ खड़े रहने का भी सामर्थ्य नहीं है। इसलिए मैं युद्ध नहीं करना चाहता।

सन्दर्भ-पूर्व की तरह।

प्रसंग-कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन श्रीकृष्ण के समक्ष युद्ध लड़ने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर रहा है।

व्याख्या-कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण अर्जुन के रथ को दोनों सेनाओं के बीचोबीच खड़ा कर देते हैं। दुश्मन सेना पर जैसे ही अर्जुन दृष्टि डालता है तो अपने नाते-रिश्तेदारों, परिजनों, शुभचिन्तकों इत्यादि को सामने देख उसके होश उड़ जाते हैं। वह श्रीकृष्ण के सम्मुख युद्ध न करने की बात कहता है। वह कहता है कि अपनों के विरुद्ध युद्ध लड़ने की सोचने मात्र से उसके शरीर में कँपकँपी छूट रही है। उसके हाथ से उसका प्रिय धनुष गाण्डीव भी छूटा जा रहा है। अपनों को सामने खड़ा देखकर उसका मन भ्रमित हो रहा है। उसमें तो मैदान में खड़ा रहने तक की शक्ति नहीं रह गई है। वह श्रीकृष्ण से कहता है कि वह इन परिस्थितियों में युद्ध नहीं करना चाहता।

शब्दकोश

आतुर = उतावला, अधीर, उत्सुक; तीर्थाटन = तीर्थयात्रा; सामर्थ्य = क्षमता, ताकत; जिज्ञासा = उत्सुकता; आचरण = व्यवहार; संशय = आशंका/संदेह; उत्सर्ग = आत्म बलिदान दुविधा = अनिर्णय, अंतर्द्वन्द्व।

https://www.evidyarthi.in/